श्रीविष्णु

(कार्य, विशेषताएं एवं उपासनाका अध्यात्मशास्त्र)

भूमिका

बहुतांश उपासकोंको अपने आस्थाकेन्द्र देवतासम्बन्धी जो थोडी-बहुत जानकारी रहती है, वह अधिकतर पढी-सुनी कथाओंसे होती है । ऐसी अल्प जानकारीके कारण देवताओंपर उनका विश्वास भी अल्प ही होता है । देवताओंकी अध्यात्मशास्त्रीय जानकारीसे उनके प्रति श्रद्धा निर्माण होती है एवं श्रद्धा भावपूर्ण उपासना हेतु सहायक है । भावपूर्ण उपासना अधिक फलदायी होती है । इस दृष्टिसे इन ग्रन्थोंमें प्रस्तुत श्रीविष्णुसम्बन्धी ऐसा अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान दिया है, जो अन्यत्र अनुपलब्ध है; परन्तु उपयुक्त है ।

इस ग्रन्थमें दिया अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान विष्णुभक्तोंके लिए एवं साम्प्रदायिक साधना करनेवालोंके लिए निश्चित ही उपयुक्त होगा; परन्तु सामान्य व्यक्ति इस सन्दर्भमें निम्नांकित नियम ध्यानमें रखें । कुछ लोगोंको गणपति अथर्वशीर्ष पढनेपर गणपतिकी एवं शिवलीलामृतका पठन करनेपर शिवकी उपासना करनेकी इच्छा होती है । इसी प्रकार इस ग्रन्थमें दी गई देवतासम्बन्धी जानकारी पढकर कुछ लोगोंको उनकी उपासना करनेकी इच्छा हो सकती है । ध्यानमें रखें कि श्रीविष्णु जैसे देवताकी उपासनासे सबकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र नहीं होती; क्योंकि उनके लिए जिस देवताकी उपासना आवश्यक है, वही करनेसे अधिक लाभ होता है, अन्यथा अधिक साधना करनेपर भी प्रगति अल्प होती है । सामान्य मनुष्य नहीं जान सकता कि किस देवताकी उपासना आवश्यक है । आध्यात्मिक दृष्टिसे उच्च व्यक्ति (सन्त/गुरु) ही बता सकते हैं । इसलिए सामान्यजन केवल जानकारी हेतु यह ग्रन्थ पढें । उक्त देवताओंकी अनुभूति होनेकी दृष्टिसे साधनाके पहले चरणके रूपमें कुलदेवताका नामजप करें । आगे गुरु उक्त किसी भी देवताका नामजप करनेके लिए कहें अथवा साधनामें

विशिष्ट चरण साध्य करनेके उपरान्त आगेकी आध्यात्मिक उन्नति हेतु किसी देवताकी उपासना आवश्यक हो, तो ऐसेमें उस देवताकी जानकारी श्रद्धामें सहायक होती है । श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह ग्रन्थ पाठकोंको अपने इष्टदेवताके प्रति अटूट श्रद्धा एवं भक्तिभावमें सहायता प्रदान करे !

– संकलनकर्ता

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १४

२. कुछ अन्य नाम (भगवान, नारायण, किरीटधारी, लक्ष्मीपति, हरि एवं श्रीहरि) १४

* आचमन करते समय उच्चारण हेतु चौबीस नाम १९

* श्रीविष्णुके सहस्र नामोंमेंसे चौबीस ही नाम चुननेका महत्त्व एवं चौबीस नामोंका अर्थ १९

* हाथोंके क्रम एवं आयुधानुसार सम्भावित चौबीस रूप २६

३. मूर्तिविज्ञान २६

३ अ. आयुध, अलंकार, परिवार एवं उनका सैद्धान्तिक अर्थ २६

३ आ. शेषशायी विष्णु (पद्मनाभ) २८

४. रूप एवं परिवार ३१

५. कार्य एवं विशेषताएं ३९

* अन्नरसदेवता (प्राणिमात्रका पोषण करनेवाले) ३९

* वचन देकर उसका सदा पालन करनेवाले ४०

* विश्वका सन्तुलन बनाए रखनेवाले ४०

* शारीरिक वैशिष्ट्ये (वर्ण, श्रीवत्सलांछन आणि कटिवस्त्र) ४०

* कुण्डलिनीयोग एवं श्रीविष्णु ४३

६. दशावतार (मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह (नृसिंह), वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध एवं कल्कि) ४३

७. निवास, विष्णुलोक (वैकुण्ठ), विष्णुक्रम एवं विष्णुमार्ग ५४

८. भारत स्थित श्रीविष्णुके प्रसिद्ध मन्दिर ५६

९. उपासना ५३

* श्रीविष्णुकी पूजासे पूर्व विष्णुतत्त्वकी सात्त्विक रंगोलियां बनाना ५६

* श्रीविष्णुकी उपासनाके अन्तर्गत कुछ नित्य कृत्य ६०

* श्रीविष्णुसे करने योग्य कुछ प्रार्थनाएं ६१

* कुछ मन्त्र * एकादशी व्रत ६३

* श्रीसत्यनारायण पूजा * विष्णुयाग ६५

१०. सम्प्रदाय ६९

११. श्रीविष्णुकी विभूति एवं अंश ७४

卐 श्रीविष्णुसम्बन्धी आलोचना या अनुचित विचार एवं उनका खण्डन ७६

卐 **संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण** ७९

सनातनके पूजनोपयोगी उत्पाद

卐 कुमकुम 卐 इत्र 卐 उदबत्ती

卐 बाती 卐 कर्पूर 卐 अष्टगंध

देवताओंके चित्र, नामजप-पट्टियां व लॉकेट उपलब्ध !